सऊदी अरब-रियाज़
इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय
रब्वा
1430-2009

islamhouse.com

क्या सफ़र का महीना अशुभ है?

[*हिन्दी*]

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

All islamhouse.com rights are open

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

الحمد لله رب العالمين، والعاقبة للمتقين، والصلاة والسلام على المبعوث رحمة للعالمين، نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين، ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين، أما بعد:

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान सर्व संसार के पालनहार अल्लाह के लिए है, तथा अल्लाह की दया और शान्ति की वर्षा हो हमारे पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, आप की संतान, आपके सहाबा किराम (साथियों) और क़ियमात के दिन तक आप का अनुसरण करने वालों पर।

इस्लामी भाईयो !

सफर का महीना हिजरी वर्ष के बारह महीनों में से एक है, जो कि मुहर्रम महीने के पश्चात आता है। कुछ लोगों का कहना है कि इस महीने का नाम सफर इस लिए रखा गया कि इस महीने में जब लोग यात्रा करते थे तो मक्का अपने निवासियों से खाली (शून्य) हो जाता था। और एक कथन के अनुसार : इस महीने का नाम सफर इसलिए पड़ा कि इस महीने में अरब लोग क़बीलों से लड़ाई करते थे और जिस को पाते थे उसे सामान से खाली करके छोड़ते थे (यानी उसके सामान को छीन लेते थे जिस से वह बे-सामान हो जाता था। (देखिए : लिसानुल अरब, लेखक : इब्ने मन्ज़ूर 4/462-463)

इस महीने के बारे में क़ुर्आन व हदीस में क्या वर्णित है, और लोगों के अन्दर इस के संबंध में क्या गलत धारणाएं पाई जाती हैं, और इनका शुद्ध इस्लामी अक़ीदा पर क्या प्रभाव पड़ता है, तथा इस से बचाव का तरीक़ा क्या है? इन सभी बातों पर संछेप में प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है।

जाहिलियत के समय काल के अरब सफर के महीने में दो बड़े अवैध कार्य करते थे :

पहला : इस महीने को आगे या पीछे करके खिलवाड़ करते थे।

दूसरा : इस महीने से अपशकुन लेते थे।

1.यह बात ज्ञात है कि अल्लाह तआला ने साल के महीनों की संख्या बारह रखी है, और उनमें से चार महीने हुर्मत और सम्मान वाले घोषित किए हैं, जिनमें लड़ाई-झगड़ा करना वर्जित ठहराया है, वो चार महीने : ज़ुल-क़अ्दा, ज़ुल-हिज्जा, मुहर्रम और रजब हैं।

इसका प्रमाण अल्लाह की किताब में उसका यह कथन है :

﴿إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِندَ اللّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْراً فِي كِتَابِ اللّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ فَلاَ تَظْلِمُواْ فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ﴾

“अल्लाह के निकट महीनों की संख्या अल्लाह की किताब में १२ -बारह- है उसी दिन से जब से उस ने आकाश और धरती को पैदा किया है, उन में से चार हुर्मत व अदब -सम्मान- वाले हैं। यही शुद्ध धर्म है, अतः तुम इन महीनों में अपनी जानों पर अत्याचार न करो।” (सूरतुत-तौबाः ९/३६)

मुशरिकों को इस बात का ज्ञान था, किन्तु वो अपनी इच्छा अनुसार हराम महीनों के इस आदेश (तरतीब) को आगे पीछे कर दिया करते थे, चुनाँचि वो एक साल सफर के महीने को हलाल समझते थे और दूसरे साल हराम घोषित कर देते थे, अर्थात् ‘सफर’ के महीने को ‘मुहर्रम’ के स्थान पर कर देते थे!

2- जाहिलियत के समय काल के लोग सफर के महीने से बुरा शकुन लेते थे, जिस के अवशेष प्रभाव आज भी कुछ मुसलमानों के अन्दर पाये जा रहे हैं। जबकि इस्लाम ने जाहिलियत (अज्ञानता युग) की सभी झूठी मान्यताओं, झूठे भ्रमों और खुराफात का खण्डन किया है; क्योंकि इन चीज़ों का मन, व्यवहार और बुद्धि पर महान खतरा है, और ये मानव के हृदय में अल्लाह के साथ अच्छे गुमान को कमज़ोर कर देते हैं या बिल्कुल नष्ट ही कर देते हैं। चुनाँचि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“प्राकृतिक रूप से कोई संक्रमण भावुक नहीं है, न कोई बुरा शकुन है, न उल्लू के बोलने का कोई प्रभाव है, और न ही सफर का महीना ही (मनहूस या दुर्भाग्य) है।”
(बुखारी हदीस नं.:5387, मुस्लिम हदीस नं.:2220)

इस हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चार चीज़ों का खण्डन किया है जो अल्लाह तआला पर संपूर्ण तवक्कुल (भरोसा) और शुद्ध इस्लामी अक़ीदा के विपरीत हैं और जिन के कारण आदमी झूठी मान्यताओं और भ्रमों का शिकार बन जाता है और अल्लाह पर उसकी आस्था और श्रद्धा कमज़ोर हो जाती है, :

1. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कोई संक्रामक रोग प्राकृतिक रूप से अल्लाह की आज्ञा के बिना किसी स्वस्थ आदमी को प्रभावित नहीं करता है। इस से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने संक्रमण के अस्तित्व का इन्कार नहीं किया है, बल्कि जाहिलियत के लोगों के इस भ्रम को नकारा है जो यह आस्था रखते थे कि संक्रमण प्राकृतिक रूप से अपरिहार्य प्रभाव डालता है और निश्चित रूप से संक्रमित व्यक्ति के साथ मेल-मिलाप रखने वाला आदमी उस संक्रामक रोग से ग्रस्त हो जाता है। उनके विश्वास में ऐसा अल्लाह के फैसले और आज्ञा से नहीं होता है। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका खण्डन करते हुए फरमाया कि बीमार आदमी की संगत से स्वस्थ आदमी को स्वयं बीमारी नहीं लगती है, बल्कि उसका संक्रमण मात्र अल्लाह की आज्ञा और उसकी इच्छा से होता है, और यह भी आवश्यक नहीं कि बीमार आदमी के साथ मेल-मिलाप रखने से स्वस्थ आदमी को बीमारी लग ही जाए, बल्कि अगर अल्लाह की आज्ञा होगी हो तो स्वस्थ आदमी संक्रमण-ग्रस्त होगा और अल्लाह की आज्ञा और इच्छा नहीं होगी तो स्वस्थ आदमी रोगी से संगत रखने के कारण संक्रमण से ग्रस्त नहीं होगा।

2. दूसरी चीज़ आप ने बुरे शकुन का खण्डन किया है, यह भी जाहिलियत के युग की झूठी मान्यताओं और मिथ्याओं में से एक है, बल्कि अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के कथनानुसार कोई भी व्यक्ति इसके प्रभाव से सुरक्षित नहीं है, हर आदमी के दिल में कुछ न कुछ बुरा शकुन पैदा हो जाता है, किन्तु तवक्कुल के द्वारा अल्लाह तआला इसको समाप्त कर देता है। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका खण्डन करते हुए फरमाया कि अपशकुन की कोई वास्तविकता नहीं है, बल्कि यह एक भ्रम और भ्रष्ट-मान्यता है। इसके अन्दर अल्लाह के साथ बुरा गुमान और निराशावाद पाया जाता है। जबकि मुसलमान को अल्लाह के साथ अच्छा गुमान रखना चाहिए और आशावादी होना चाहिए।

3. अरब के लोग यह आस्था रखते थे कि जब किसी आदमी की हत्या कर दी जाती है तो उसकी रूह एक पंछी का रूप धारण कर लेती है और उड़ती और चिल्लाती रहती है यहाँ तक कि उसका बदला ले लिय जाए, जिसे उल्लू कहा जाता है, जाहिलियत के युग के लोग इस से नहूसत और अपशकुन लेते थे, अगर किसी के घर पर उल्लू बोल देता तो यह समझते की वह उसकी मृत्यु की सूचना दे रहा है। चुनाँचि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका खण्डन करते हुए फरमाया कि उल्लू के बोलने की कोई वास्तविकता नहीं है, उसका बोलना किसी बुराई का संकेत नहीं बलिक जिस तरह दूसरे पंछी बोलते हैं उसी तरह उल्लू भी बोलता है। अतः उल्लू या किसी अन्य पंछी से अपशकुन लेना एक बातिल और भ्रष्ट श्रद्धा और मात्र एक भ्रम है।

4. '**सफर**' हिजरी कलेन्डर का दूसरा महीना है जो मुहर्रम के बाद आता है, जाहिलियत के युग में लोग इस महीने से बुरा शकुन लेते थे, और उनकी यह धारणा थी कि इस महीने में मुसीबतें और बुराईयाँ उतरती हैं, अतः जो शादी करना चाहता था वह इस महीने में शादी नहीं करता क्योंकि उसके विश्वास में उसकी शादी शुभ नहीं होगी, तिजारत का इच्छुक इस महीने में कोई तिजारती मामला नहीं करता क्योंकि उसके विश्वास में उसे सफलता और लाभ प्राप्त नहीं होगा, और अपने देश से दूर किसी काम के लिए रवाना होने की इच्छा रखने वाला इस महीने में नहीं जाता था क्योंकि उसके भ्रम में इस महीने में मुसीबतें और प्रकोप उतरते हैं। इसलिए पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मिथ्या और झूठी मान्यता का खण्डन किया और फरमाया कि सफर का महीना अशुभ और बुराई का महीना नहीं है, बल्कि अल्लाह के अन्य महीनों के समान यह भी एक महीना है, जिसमें कोई भी चीज़ अल्लाह तआला की इच्छा और आज्ञा के बिना घटित नहीं होती है, और अल्लाह तआला ने इस महीने को बुराईयों और मुसीबतों के उतरने के लिए विशिष्ट नहीं किया है, बल्कि इस महीने में मुसलमानों के इतिहास में अनेक बड़ी विजयें प्राप्त हुई हैं, और मुसलमानों को बड़ी सफलताएं मिली हैं, अतः यह नहूसत का महीना नहीं है, नहूसत और बुरा शकुन दरअसल अल्लाह तआला की अवज्ञा में है, क्योंकि यह अल्लाह के क्रोध और प्रकोप का कारण है।

इस्लामी भाईयो ! वर्तमान समय में भी कुछ शुद्ध इस्लामी अक़ीदा से अनाड़ी और गंवार लोग सफर के महीने से बुरा शकुन लेते हैं, और इस महीने में शादी-विवाह करने-कराने, यात्रा करने, व्यापार आरम्भ करने आदि से अपेक्षा करते हैं, और इस महीने में अधिक भयभीत रहते हैं ; कयोंकि वो यह विश्वास रखते हैं कि सफर का महीना बुराईयों और मुसीबतों को जन्म देता है और खुशियों को समाप्त कर देता है।

कुछ जाहिल (गंवार) लोग सफर महीने की अन्तिम बुधवार को सलाम वाली कुर्आन की आयतें, मसलन : ﴿ سلام على نوح في العالمين ﴾ लिखते हैं, फिर उन्हें बरतनों में रख कर पीते हैं, उन से तबर्रूक लेते हैं, तथा एक दूसरे को तोहफा देते हैं, जिसके बारे में उनका विश्वास होता है कि ऐसा करना बुराईयों को दूर भगाता है। जबकि यह एक मिथ्या और घृणित अक़ीदा है।

कुछ लोग यह दावा करते हैं कि सफर के महीने की अन्तिम बुधवार को आसमान से एक बीमारी उतरती है, चुनाँचि वो लोग अपनी हाँडियों को पलट देते हैं और अपने बरतनों को ढाँप देते हैं, इस भय से कि वह काल्पनिक बीमारी उसमें न उतर जाए।

तथा कुछ लोग जब सफर के महीने की मसलन पचीसवीं तारीख को किसी विशिष्ट काम से फारिग होते हैं तो इसको इस प्रकार लिखते हैं : सफर अल-ख़ैर (भलाई वाले सफर के महीने) की २५वीं तारी को फारिग हुआ। तो यह अल्लामा मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन रहिमहुल्लाह के अनुसार बिदअत का इलाज बिदअत के द्वारा है, क्योंकि वह न तो खैर का महीना है न शर (बुराई) का (अतः सफर के महीने को सफर अल-ख़ैर नहीं कहा जाये गा), इसीलिए कुछ सलफ (पूर्वजों) ने उस आदमी का खण्डन किया जिसने उल्लू को बोलते हुए सुन कर कहा था : ''अगर अल्लाह ने चाहा तो ख़ैर ही होगा।'' इसलिए न ख़ैर कहा जाए गा और न ही शर, बल्कि वह भी अन्य पंछियों के समान बोलता है।

कुछ लोग झूट-मूट अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से झूठी गढ़ी हुई हदीसें रिवायत करते हैं, चुनाँचि वो कहते हैं : ''सफर के महीने का अन्तिम बुधवार निरंतर नहूसत का दिन है।'' (अल्लआली-अल-मस्नूआ २/४५८)

हालाँकि यह एक झूठी और गढ़ी हुई हदीस है।

तथा दूसरी हदीस इस प्रकार उल्लेख करते हैं :

''जिसने सफर के महीने के निकल जाने की शुभ-सूचना दी, उसे मैं जन्नत में दाखिल होने की खुश्ख़बरी दूँगा।'' (कश्फुल-खिफा २/३०६)

यह भी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर झूठ और आरोप है। इसके अतिरिक्त अन्य हदीसें भी गढ़ी गई हैं।

इस्लाम भाईयो ! जब किसी मुसलमान के दिल में कोई बुरा शकुन आ जाए तो वह दो हालतों से खाली नहीं होता :

प्रथम : या तो वह उसे स्वीकार करते हुए उसके अनुसार अपने काम को कर गुज़रे या उस से रूक जाए, ऐसी अवस्था में उसने अपने काम को ऐसी चीज़ पर आधारित और संबंधित कर दिया जिसकी कोई वास्तविकता नहीं है। इसी चीज़ के बार में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है :

''जिस व्यक्ति को शकुन उसकी आवश्यकता (काम) से रोक दे तो उसने शिर्क किया।'' (मुस्नद अहमद २/२२०, सिलसिला सहीहा :१०६५)

द्वितीय : वह उसे स्वीकार न करे बल्कि उसकी परवाह किए बिन अपने काम को जारी रखे, किन्तु उसके दिल में कुछ शंका या भय बाक़ी रहे, तो अगरचे इस का

मामला पहले से कमतर है किन्तु यह भी वर्जित है और इस से अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) और एकेश्वरवाद में कमी पैदा होती है।

इसलिए एक मुसलमान को चाहिए कि इस तरह की काल्पनिक चीज़ों और झूठे भ्रमों पर कोई ध्यान न दे बल्कि अल्लाह तआला पर दृढ़ तवक्कुल और भरोसा के द्वारा इन्हें नष्ट कर दे। निःसन्देह अल्लाह तआला ही सभी भलाईयों का उत्पत्ति कर्ता और समस्त बुराईयों को समाप्त करने वाला है, तथा अल्लाह की तौफीक़ के बिना किसी बुराई को दूर करने और किसी भलाई को प्राप्त करने की कोई ताक़त और शक्ति नहीं है।

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
atazia75@gmail.com

المملكة العربية السعودية – الرياض
المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات
بالربوة
٢٠٠٩م – ١٤٣٠هـ

islamhouse.com

﴿ التشاؤم بشهر صفر ﴾

« باللغة الهندية »

عطاء الرحمن ضياء الله

حقوق الطبع والنشر لعموم المسلمين